शब्द–ब्रह्म
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2320 – 0871
17 अक्टूबर 2013

महात्मा गांधी जी का शिक्षा दर्शन

डा. बलबीर सिंह जमवाल, प्रधानाचार्य,
बी.के.एम. कालेज आफ एजुकेशन
बलाचोर, जिला शहीद भगत सिंह नगर,
पंजाब, भारत

शोध संक्षेप

महात्मा गांधी ने अपने जीवन में शिक्षा के अनेक प्रयोग किए। उनके ये प्रयोग तभी प्रारंभ हो गए थे, जब वे दक्षिण अफ्रीका में थे। भारत आने पर उन्होंने गुरुदेव रवींद्र नाथ टैगोर द्वारा स्थापित शांति निकेतन में नयी तालीम के अनेक प्रयोग किए और श्री टैगोर ने इन्हें देखकर कहा था कि इसमें आजादी की चाबी छिपी हुई है। इसके बाद सन् 1937 में विधिवत् तरीके से नयी तालीम के विद्यालय देष में प्रारंभ हुए। इसका पाठ्यक्रम बनाया गया। प्रस्तुत शोध पत्र में महात्मा गांधी के शिक्षा संबंधी विचारों का अवलोकन किया गया हैं।

प्रस्तावना

गांधी जी ने वैज्ञानिक एवं औद्योगिक क्रान्ति पहले तीनों चरणों में रहते हुए विज्ञान एवं तकनीकी दोनों के सकारात्मक व मानवीय पक्षों तथा उनकी विनाशकारी संभवानाओं व दुरूपयोग की अंतःशक्तियों, जिनके द्वारा धनी एवं निर्धनों के बीच की खाई और अधिक बढ़कर अंततः विनाश की ओर ले जा सकती है, इस पर बड़ी गहनता से विचार किया। उपभोक्तावादी जीवन प्रणाली में निश्चित रूप से कुछ त्रुटि को समझते हुए, जिसके फलस्वरूप अनेक लोग एक ऐसे समाज का अनुसरण कर रहे थे जो हिंसा, प्रदर्शनवाद और उपभोक्तावाद की ओर प्रेरित था, एक ऐसा जीवन जो प्रकृति से कहीं दूर था, और एक ऐसी दिशा में जा रहा था जो संतुलित जीवन के लिए हितकारी ना था अथवा विभिन्न राष्ट्रों, जातियों जन जातियों, रंग भेदों तथा विचारधाराओं के लोगों में समानता के अवसरों को प्रोत्साहित नहीं करता था, गांधी जी ने विकल्पों की खोज प्रारंभ की बाद में दक्षिण अफ्रीका में उनके अनुभवों के साथ और परिपक्व एवं व्यापक हुई। आगे चलकर गांधी जी ने सत्य, अहिंसा तथा सत्याग्रह का बड़ी सफलता के साथ उपयोग किया तथा सामाजिक एवं राजनैतिक परिवर्तन हेतु प्रभावकारी उपकरण के रूप में उनकी विश्वसनीयता स्थापित की।महान विचारकों, संतों तथा दार्शनिकों की भांति गांधी जी का यह पूर्ण विश्वास था कि अन्याय, हिंसा तथा तानाशाही मानव के हृदय से ही प्रकट होते हैं और शिक्षा एक सम्पूर्ण तथा सुस्वस्थ मानव व्यक्तित्व को विकसित करने में प्रभावी भूमिका निभाती है जिनके फलस्वरूप व्यक्ति हिंसा, अन्याय तथा तानाशाही का विरोध करने योग्य बनता है। और एक सामाजिक व्यवस्था को गति करने की शक्ति अर्जित करता है जिसमें मानव

अन्य लोगों के साथ शांति व सदभाव के साथ रह सकता है। क्योंकि शिक्षा मानव र्निमाण तथा सामाजिक यंत्रशास्त्र का एक शक्तिशाली उपकरण है।

शिक्षा का अर्थ

शिक्षा का साधारण शब्दों में अर्थ अक्षर ज्ञान ही होता है लोगों को लिखना पढ़ना और हिसाब करना, सिखाना मूल या प्रारंभिक शिक्षा कहलाती है। लेकिन अक्षर ज्ञान ही देना है तो मेरी समझ में उसकी हालत के प्रति उसमें आपको असंतोष पैदा करना है। शिक्षा का मतलब केवल अक्षर ज्ञान देना ही नहीं समझना चाहिए बल्कि ऐसी शिक्षा देनी चाहिए जिसको सीख कर उसका सदुपयोग कर सके। बच्चों को सच्ची शिक्षा देनी चाहिए। सच्ची शिक्षा तो बच्चों के चरित्र निर्माण में है। शिक्षक यदि इसी उम्र के बच्चों को यह ज्ञान दे कि जीवन में चरित्र ही सबसे पहली और आखिरी वस्तु है और यह कि अक्षर ज्ञान तो चरित्र गठन का साधन मात्र है। अयति माता-पिता को चाहिए कि अपने बच्चों को सच्ची शिक्षा दें। सच्ची शिक्षा कासही मतलब है कि बच्चा सभी इन्द्रियों से काम ले और शिक्षा का सही उपयोग करें। अक्षर ज्ञान से दूर हट कर चरित्र निर्माण या गठन ही सच्ची शिक्षा मानी जाती है। गांधी जी का विचार है कि सच्ची शिक्षा वही है जो इन्सान को इन्सानियत सिखाती है। महात्मा गांधी जी ने शिक्षा को प्रभावित करते हुए कहा "शिक्षा से मेरा तात्पर्य है बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क व आत्मा का उत्कृष्ट।

शिक्षा के उद्देश्य

गांधी जी द्वारा शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य बताये गये हैं :

1. चरित्र र्निमाण:- गांधी जी द्वारा बताया गया है कि शिक्षा का उद्देश्य चरित्र निर्माण होना चाहिए, क्योंकि चरित्र निर्माण ही सच्ची शिक्षा हैं।

2. राष्ट्र र्निमाण:- राष्ट्रीय शिक्षा का काम छोटा नहीं है इसका कार्य बड़ा व्यापक है राष्ट्रीय शिक्षा का मुख्य उद्देश्य नया समाज का निर्माण करना है जो सवंयभू, स्वतंत्र, स्वयंशासित और स्वंय प्रेरित हो। राष्ट्र निर्माण जीवन की नाव है। यह कठिन मार्ग के समान है, क्योंकि इसके लिए अपना सब कुछ अर्पण करना होगा। अखण्ड कर्मयोग साधना पढ़ेगा। कर्मयोग, भक्तियोग, ध्यानयोग और ज्ञानयोग का समन्वय करके इनमें से जीवन योग प्रकट करना होगा। सच्ची शिक्षा ही राष्ट्र निर्माण कर सकती है।

3. पवित्रता:- गांधी जी का मानना है शिक्षा का मुख्य उद्देश्य पवित्र जीवन का विकास करना है। सही मायनो में पवित्र जीवन के बिना सारी शिक्षा बेकार है।

4. सच्ची शिक्षा की राह:- गांधी जी का मत है कि सच्ची शिक्षा वही है जो हमें स्वतंत्रता का मार्गदर्शन करवाती है और उसी शिक्षा को उच्च शिक्षा माना जाता है जो हमें धर्म का सरंक्षण करने के लिए समर्थ बनाती है। सच्ची राह दिखना ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए।

5. मनुष्यत्व का विकास करना:- जो शिक्षा मनुष्य से मनुष्यत्व का विकास करती है वही सच्ची शिक्षा है। मनुष्यत्व का विकास करना ही शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए।

6. मानव विकास:- सच्ची शिक्षा उसे ही माना जाता है जो मनुष्य के अन्दर की भावनाओं को जागृत करे। अपितु शिक्षा का उद्देश्य मानव का विकास होना चाहिए।

7. सदाचार:- गांधी जी मानते है कि सदाचार और निर्विकार जीवन की सच्ची शिक्षा का आधार स्वस्थ है शिक्षा संस्थाओं में अध्यापकों व विद्यार्थी का चयन करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि उनका आचरण ठीक है या नहीं। इस बात को गंभीरता के साथ प्रचार करना चाहिए।

8. नैतिक शिक्षा:- शिक्षा का उद्देश्य नैतिक विकास करना होना चाहिए क्योंकि नैतिक शिक्षा मानव को मानवता का पाठ पढ़ाती है सिवाय चरित्र गठन के धार्मिक और नैतिक शिक्षा का अर्थ नही है। ईश्वर के प्रति विश्वास और अच्छे विचार अपने और दूसरों के प्रति ही नैतिक शिक्षा के मुख्य पहलू है। नैतिक शिक्षा ही मनुष्य को मनुष्यता का पाठ पढ़ाती है।

9. भातृत्व भावना का विकास:- भातृत्व भावना का विकास करना ही सच्ची शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए, क्योंकि इससे अलग गुण बाहर आते हैं तथा भाईचारे से शान्ति की स्थापना होती है, जो प्रगति का सूचक मानी जाती है।

10. चितशुद्धि:- चितशुद्धि का मतलब है मन की शुद्धि तथा आत्मा की शुद्धि। अगर व्यक्ति का चित शुद्ध है, दिल साफ है तो भगवान भी हमारा भला करेगा तथा दुनिया का भी भला होगा। इसलिए शिक्षा का उद्देश्य चित शुद्धि होना चाहिए।

11. शिष्टाचार:- सच्ची शिक्षा उसी को माना जाता है जिससे मुक्ति मिले और शिष्टाचार आए। अगर हम सच्चे ज्ञान को प्राप्त करने की चिन्ता करेगे तो हमारा काम बनेगा कार्य करेगे। इसका अर्थ है कि शिष्टाचार शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए।

12. आत्मदर्शन:- आत्मदर्शन का मतलब है जिस शिक्षा द्वारा हम अपनी आत्मा को, सत्य और ईश्वर को पहचान सके। आत्मा को पहचानना ही ईश्वर व सत्य को पहचानना है। यही शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए अयति कहनें का अर्थ है कि शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे आत्मा के दर्शन होने चाहिए।

13. आत्मनिर्भरता:- शिक्षा का उद्देश्य आत्मनिर्भरता होना चहिए ऐसी शिक्षा बच्चों को देनी चाहिए जिसमें बच्चे आगे चलकर आत्मनिर्भरता बन सकें।

14. पूर्णता:- शिक्षा का उद्देश्य पूर्णता होना चाहिए, शिक्षा इस प्रकार देनी चाहिए जिसमें बच्चा पूर्ण मानव वन सके। अमति पूर्ण मानव बनाना चाहिए।

15. देश सेवा:- देश की सेवा की भावना का विकास करना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए शिक्षा एक साधन मात्र है। यदि उसके साथ सच्चाइ्र,हृदयता, भंाति आदि गुणों का सम्मिश्रण नहीं होता तो वह शिक्षा बेकार है।

16. लोक सेवा:- लोक सेवा की भावना का विकास करना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए, अमति विद्यार्थियों में लोक सेवा की भावना साम्रत हे ऐसी शिक्षा देनी चाहिए।

17. आन्तरिक शक्तियों का विकास:- गांधी जी का मत है कि जो शिक्षा इतनी शक्ति सम्पन्न हो सकती हे कि वह विद्यार्थियों की भीतरी शक्तियों का विकास कर जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में उठने वाली समस्याओं का समाधान करें, वही शिक्षा अमूल्य है।

18. चहुमुखी विकास:- बच्चों को इस प्रकार की शिक्षा देनी चाहिए जिससे चहुमुखी विकास हो सके। अयति बच्चे का शारीरिक, मानसिक और आत्मिक शक्तियों का चहुमुखी विकास।

19. चरित्र विकास:- चरित्र का विकास करना शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। शिक्षा हमारा साध्य नहीं है साधन है। जिस शिक्षा से हम चरित्रवान बन सके वास्तव में वही सच्ची शिक्षा मानी जा सकती है।

20. मस्तिष्क और हृदय का विकास:- शिक्षा का मुख्य उद्देश्य मस्तिष्क और हृदय का विकास करना है, शिक्षा मस्तिष्क का विकास करती है तथा मस्तिष्क सच्चे हृदय का विकास करता है।

21. देश भक्ति:- सच्ची शिक्षा का उद्देश्य देश भक्ति का विकास करना होना चाहिए। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे विद्यार्थी उत्तम नागरिक बने, उत्तम स्वदेश सेवक बने तथा समाज को और उज्जवल

22. बंधन मुक्ति:- शिक्षा का उद्देश्य बंधन मुक्ति होना चाहिए। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जो मानव को बंधन से मुक्त करे, देश की समृद्धि में वृद्धि हो, बच्चे कुशल बने और हमारी व देश की शेभा बढे।

23. सेवा:- सेवा की भावना विद्यार्थियों में होनी चाहिए। अगर शिक्षा काल में ही विद्यार्थियों को सेवा करने का मौका मिल जाऐ तो उसे अपने आप को सौभाग्यशाली समझना चाहिए। सेवा करना ही भगवान की सेवा मानी जाती है। अथति शिक्षा का उद्देश्य सेवा की भावना का विकास होना चाहिए।

24. प्रतिभा का विकास:- शिक्षा का उद्देश्य प्रतिभा का विकास करना होना चाहिए। विद्यार्थी को उतनी शिक्षा देनी चाहिए जितनी उसमें प्रतिभा हो।

25. आत्म जागरण:- शिक्षा का उद्देश्य आत्म जागरण होनी चाहिए। इसका अर्थ है कि विद्यार्थियों की आत्माओं को जागृत करना, उसकी बुद्धि ओर आत्माओं को विकसित करना तथा शरीरिक विकास करना ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होना चाहिए।

26. सृजनात्मकता:- सृजनात्मकता शिक्षा का उद्देश्य होना चाहिए। शिक्षा के हारा विद्यार्थी शरीरिक मानसिक विकसित हो और उनमें सभ्यता आ जाऐ और जिसके द्वारा कुछ जो करे वह सृजनात्मक हो, ऐसी कला उनमें से विकसित हो सके, ऐसी शिक्षा उनको देनी चाहिए।

शिक्षा के स्तर

प्रारंभिक शिक्षा : प्रारंभिक शिक्षा वही शिक्षा होती है जो शुरू में दी जाती है इसमें ठीक ही कहा गया है माँ प्रथम गुरू, पिता द्वितीय और अध्यापक तृतीय गुरू होता है। माँ द्वारा शिक्षा:- प्रथम शिक्षा का पाठ बच्चा अपनी माँ से सीखता है। माँ अपने बच्चे को अपनी रक्त की बुँदे

पिलाती है, बच्चा धीरे-धीरे अपनी माँ की गोद में सीखता रहता है। बोलना, चलना, दौड़ना सब कुछ अपनी माँ से सिखता है। माँ ही बच्चे को सफाई का पाठ सिखाती है। माँ ही अपने बच्चे को शुद्ध उच्चारण सिखाती है। भक्ति, भूगोल व समाज का अध्ययन भी माँ ही करवाती है। माँ द्वारा प्रारंभिक ज्ञान बच्चों का सब कुछ सिखाती है। माँ की ममता ही बच्चे को शिक्षा देती है।

प्राथमिक शिक्षा का स्वरूप :- प्राथमिक शिक्षा का स्वरूप किस प्रकार का होना चाहिए, इसके बारे में कहना बड़ा कठिन है। आजकल के प्राथमिक शिक्षा के स्वरूप में बच्चें को बोझ तले दबा दिया है। किताबों का बोझ ही इतना है कि बच्चे पूरी तरह मानसिक व शरीरिक रूप से विकसित नहीं हो पा रहे है। आँखों पर चस्में नजर आ रहें है। प्राथमिक शिक्षा के बारे में गांधी जी का विचार है कि बच्चों को प्राथमिक शिक्षा प्रदान करनी है किताबों के बिना दी जा सकती है जिसके द्वारा शारीरिक व मानसिक विकास आसानी से हो सकता है। शिक्षक को चाहिए की मुख जबानी बच्चों को ज्ञान दें। इतिहास, भूगोल, विज्ञान आदि को शिक्षक बड़ी आसानी से पड़ा सकते है। अक्षर ज्ञान का बोझ डालकर उसकी प्रगति और स्मरण शक्ति को रोका जाता है। इस प्रकार प्राथमिक प्रारंभिक शिक्षा मस्तिष्क व शारीरिक बोझ से मुक्त होनी चाहिए, बच्चों को जो भी काम करवाना हो उसे मस्तिष्क बोझ से परे हट कर करना चाहिए।

सरकारी स्कूल : सरकारी स्कूलों में शिक्षा दी जाती है, लेकिन स्कूलों में वही पुरानी रामेवत पुस्तकों को पढ़ाया जाता है, हर देश की शिक्षा उसके स्वराज्य की रक्षा के लिए होती है। सरकारी स्कूलों में पुराने अमृतों के समय चल रही पद्यवि को अपनाया जाता है तथा पढ़ाया जा रहा है। गांधी जी का विश्वास है कि सरकारी स्कूलों में शिक्षा सच्ची देनी चाहिए, शिक्षा इस तरह की होनी चाहिए जिसे बच्चों में चरित्र का निर्माण हो, उनमें जो दोष हो उनको दूर किया जाये, बच्चे शहरी न बनकर बच्चे देहाती रहे, अच्छा जीवन व्यतीत करे, चरित्रवान बने। इस तरह की सरकारी स्कूलों की शिक्षा होनी चाहिए।

उच्च शिक्षा : राष्ट्रीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए शिक्षा जरूरी है। अगर देश को प्रगतिशील बनाना है तो ज्ञान की सभी शाखाओं का अध्ययन करने की पर्याप्त सुविधाएं होनी चाहिए। केवल रसायन शस्त्र, औषधीशास्त्र और इंजीनियरिंग की ही नहीं अपितु साहित्य, दर्शन, इतिहास, समाज विज्ञान-सैधनिवाह और व्यवहारिक सभी प्रकार के ज्ञान की व्यवस्था होनी चाहिए। गांधी जी का विचार है कि उच्च शिक्षा के लिए एक अच्छा, पुस्तकालय हो, बेहतर प्रयोगशालाएं हो, रासायन-शास्त्रत्रएं, इंजीनियरों और दूसरे विशेषज्ञों की एक फौज हो और राष्ट्र के सभी सेवक हों। जनता विदेशी थाषा ना बोलकर अपनी भाषा बोलें, इस प्रकार प्राप्त हुआ ज्ञान आम लोगों की सम्पत्ति होगी। गांधी जी मानते हैं कि हम पश्चिम संस्कृति की घटिया या बढ़िया नकल न करें। मेरा स्वप्न है प्रत्येक भाव में एक सजीव गणतंत्र बने। उनका मानना है कि उच्च शिक्षा सच्ची होनी चाहिए। गांधी जी ने प्रौढ़-शिक्षा के बारे में स्पष्ट किया है।

प्रौढ़-शिक्षा देश की आवश्यकता से पूरा मेल खाती है। इनका मानना है कि विश्वविद्यालयों की मौजूदा शिक्षा हमें स्वाधीनता के योग्य बनाती है

बल्कि गुलाम बनाती है तो हम इस पर पुनर्विचार कर इसे राष्ट्रीय आवश्यकता के अनुकूल कर लें। गांधी का यहां कहना है कि हमें नये-नये विश्वविद्यालय खोलने चाहिए। परन्तु शिक्षा प्रान्तीय भाषा में देनी चाहिए। इनका मानना है कि सब कुछ हमें पश्चिमी से ही मिलता है ज्ञान तो कहीं से भी मिल सकता है। विश्वविद्यालयों में शिक्षकों का भण्डार होना चाहिए। उसके संस्थापक दूरदर्शी होने चाहिए। विश्व विद्यालयों की स्थापना के लिए रूपया जुटाना लोकतंत्रिक राज्य का काम नहीं है। लोगों को उनकी जरूरत होगी तो वे आवश्यक पैसा खुद जुटाऐंगे। लोकतंत्र में लगाया पैसा लोगों को दस गुणा लाभ पहुँचता है।गांधी जी मानते है कि बच्चो अपने माँ-बाप के काम धन्धा नहीं सिखते बल्कि शहरी बनने का प्रयास करते है। इसलिए इनका मानना है कि उन्हें ओद्यौगिक या दस्तकारी तालीम की शिक्षा दी जानी चाहिए। गांधी जी के विशेष तौर पर हाथ उद्योग पर बल दिया है। उनका मानना है कि साहित्य, इतिहास, भूगोल,गणित विज्ञान आदि सभी विषयों की शिक्षा उद्योग ही जानी चाहिए। बच्चे सफेद कलर नौकरियां दृढ़ता है जबकि घरेलू देशों को भूलते जा रहे

स्त्री शिक्षा : गांधी जी का मत है कि भारतवर्ष में ज्यादातर पुरूषों की शिक्षा पर बल दिया जाता है और स्त्री शिक्षा की ओर कोई ध्यान नहीं दिया जाता। भारतीय स्त्रियों को पिछड़ा हुआ रखा है। आजकल सुधार का दम रखने वाले अथवा दवा पीकर सुखी रहने वाले बहुत से भारतीय भले ही वह हिन्दु हो या मुसलमान, फारसी हो या ईसाई- स्त्रियों को या तो खिलौने के समान रहने देते है या अपने विषय भोग के लिए मनमाने ढंग से रखते है परिणाम यह होता है कि स्वंय दुर्बल होते है और वैसे ही रहते है तथा दुर्बल प्रजोत्पत्ति में सहायक बनकर, ईश्वर या खुदा को जो मंजूर होगा सो होगा-ऐसा कहकर जीवन बिताते है। यदि यों ही निरन्तर चलता रहा तो भारत को अंग्रेज सरकार से जितना चाहिए उतना पाने पर भी भारत अधम दशा में ही बना रहेगा अथति इनका मत है कि नारी को शिक्षित करना बहुत ही आवश्यक है। भारत में जब तक स्त्रियों को आवश्यक शिक्षा नहीं मिलती तब तक भारत की हालत सुधर नहीं सकती। स्त्री पुरूष की अर्धांगिनी मानी जाती है। हर माता-पिता को अपनी लड़की के बारे में और सारे भारतवासियों को स्त्री समाज के बारे में करना चाहिए। हमें हजारों स्त्रियों की जरूरत है जो मीरा बाई और राविया की बराबरी करे।

वास्तव में देखा गया है प्रकृति ने भी पुरूष व स्त्री में भेद किया है वैसे ही भेद की आवश्यकता है। समाज में दोनों का समान अधिकार है परन्तु उनके कामों में वटवाय पाया जाता है घर में राज करने का अधिकार स्त्री का है बाहर की व्यवस्था का स्वामी पुरूष है। स्त्री बच्चों को पालने वाली विधाता है इसलिए जिस तरह स्त्री को अंधेरों में ओर निर्दयता है उसी तरह उसे पुरूष के काम सौंपना निर्दयता का सूचक है और उस पर जुर्म करने के बराबर ही है। औरतों को खास उम्र के बाद स्त्रियों के लिए दूसरी ही तरह की शिक्षा का प्रबंध होना चाहिए। उन्हें गृहव्यवस्था करने का, गर्भकाल में सावधानी बर्तने का, बालकों का पालन-पोषण करने का ज्ञान देने की जरूरत है। अंत में कहने का मतलब है कि गांधी जी नारी

शिक्षा पर चल देते है तथा नारी को समाज में एक अच्छा दर्जा दिलाने के पक्ष में है।

वैसे तो नारी व पुरूष दोनों के समान अधिकार है लेकिन फीर भी स्त्री शिक्षा की योजना तैयार करने वाले लोगों को यह बात याद रखनी चाहिए। दम्पति की वाहय प्रवृति में पुरूष हाता है इसलिए वाहया प्रवृति का विशेष ज्ञान उसके लिए आवश्यक है। आंतरिक प्रवृति में स्त्री प्रमुख होती है इसलिए गृहव्यवस्था और बाल-बच्चों की शिक्षा दिक्षा आदि विषयों का विशेष ज्ञान उसके लिए आवश्यक है।

निष्कर्ष

गांधी जी को राष्ट्रपिता के नाम से जाना जाता है क्योंकि गांधीजी ने हमेशा राष्ट्र के लिए अपना सब कुछ त्याग दिया तथा देश की सेवा की। जनता की सेवा एक पिता बनकर की। अंग्रजों के साथ हर तालमेल बिठा कर देश को आजादी दिलाई। एक खुशहाल देश की कल्पना की हर क्षेत्र को खुशहाल व तराकीमप बनाने के लिए सुझाव दिए। स्वतंत्रता के बाद देश को गणतन्त्र की परिभाषा समझाई। अंत में मै कहना चाहूँगा कि अपना सब कुछ त्याग कर बापू जी ने देश के लिए न्यौछावर कर दिया। इतना बलिदान करना किसी भी इन्सान के लिए आसान नहीं है। 30 जनवरी, 1948 को देश के लिए अपना संदेश छोड़ गए। विचार करने की कला सच्ची शिक्षा है। यह कला हाथ आ जाए तो दूसरी सारी किताबें उसकी पिछे सुन्दर रीति से सज जाएँ"।

सन्दर्भ

1 विश्वास ए. अग्रवाल, जे.सी. (1998) सैवक इण्डियन एजुकेनिण्ट, दिल्ली: आर्य बुक डिपो
2 सक्सेना स्वरूप, एन.आर (2005) शिक्षा-सिद्धान्त. मेरठ : आर. लाल. बुक डिपो
3 सक्सेना सरोज (ई डी) शिक्षा के दार्शनिक एंव समाज शास्त्रीय आधार. आगरा साहित्य प्रकाशन
4 त्रिवेदी राकेश (2006) भारतीय शिक्षा का इतिहास. दिल्ली: ओमेगा पब्लिकेशन
5 यादव प्रतिभा (2005) उदीथमान भारतीय समाज मे शिक्षक. आगरा: साहित्य प्रकाशन